

पूर्व-स्कूलों को समावेशी बनाना

एस. आनन्दलक्ष्मी

समावेश आजकल का बहुत प्रचलित शब्द है। यह लोकप्रिय है और इसका भाव अच्छा लगता है। लेकिन समावेशी शिक्षा को संचालित करने की विधि अधिकांश रूप में अज्ञात बनी हुई है, बहुत कुछ बीजगणित के अज्ञात कारक एक्स की तरह!

मैं यहाँ एक सफल प्रयोग का विवरण प्रस्तुत कर रही हूँ जो विभिन्न आयु वर्गों तथा योग्यता के स्तरों के समावेश को निरूपित करता है।

राजकुमारी अमृत कौर चाइल्ड स्टडी सेण्टर एण्ड नर्सरी स्कूल की स्थापना 1959 में हुई थी, और इसने दिल्ली के लेडी इर्विन कालेज के चाइल्ड डेवेलपमेंट (बाल विकास) विभाग की सजीव प्रयोगशाला की तरह काम किया है। इसका स्थान बदला है, पर इसके सिद्धान्त स्थायी बने रहे हैं। जाहिर है कि एक स्नातकोत्तर विभाग से सम्बद्ध होना इसकी गतिविधियों के लिए कई प्रकार से लाभकारी है। 1980 के आसपास, हमें छोटे बच्चों के लिए एक सुन्दर केन्द्र बनाने के लिए धनराशि प्राप्त हुई। हमारे साथ चर्चा के बाद वास्तुकार स्टीन, दोशी एवं भल्ला (जो दिल्ली के सबसे प्रशंसित वास्तुकारों में से हैं) इसका भवन बनाने के लिए राजी हो गए। हम भाग्यशाली थे कि हमें स्टीन की एक बिलकुल मौलिक डिजाइन मिली! उसमें घास से ढँका खुला आँगन, बड़े कमरे, बाहर खेलने के स्थान, एक फैला हुआ लान और एक स्वागत करता हुआ छोटा फाटक था।

दाखिला नीति : बदलते हुए दृष्टिकोणों का आईना

प्रारम्भिक वर्षों में, जब नर्सरी स्कूल एक छोटी सी इकाई थी, उन सभी को दाखिला दिया गया जिन्होंने आवेदन किया। समय बीतने के साथ, जब संख्याएँ बढ़ती गईं, तो पालकों तथा बच्चे के साथ अनौपचारिक मुलाकातें आयोजित की गईं और यह सुनिश्चित करने के लिए कि बच्चे को स्कूल से लाभ होगा, त्वरित आकलन किए गए। बाद में, सभी बच्चों के दाखिले से पहले उनसे कुछ प्रश्न पूछे जाते थे और दी गई सामग्री के साथ उनके खेल का अवलोकन किया जाता था। धीरे–धीरे, हमारे देखते ही देखते, ये प्रवेश–पूर्व मुलाकातें दाखिला चाहने वाले बच्चों के लिए परीक्षण सत्र बन गईं, जिनमें बच्चों तथा उनके पालकों को कुछ प्रश्नों का उत्तर देना पड़ता था। इसके अदृश्य मानदण्ड दो मुख्य श्रेणियों के अन्तर्गत आते थे : बच्चे के काम करने के संज्ञानात्मक तथा सामाजिक स्तर और पालकों की उनके बच्चे की प्रगति में सहभागिता। उस समय, जो बच्चे अच्छे अंक प्राप्त करते थे और जो पालक सबसे अधिक उत्सुक प्रतीत होते थे, वे चुन लिए जाते थे। हर छोटे बच्चे को दाखिला नहीं दिया जा सकता था, इसलिए कुछ परिवारों को निराश होकर वापस जाना पड़ता था।

उस समय, मैंने हस्तक्षेप किया। स्टाफ की एक बैठक में नर्सरी स्कूल के शिक्षकों से पूछा कि हमें केवल सक्षम पालकों वाले तेज बच्चों को ही क्यों दाखिला देना चाहिए। हमारे स्तर की विशेषज्ञता तथा प्रतिबद्धता को देखते हुए, क्या हमें सभी श्रेणियों के बच्चों को शिक्षित करने में समर्थ नहीं होना चाहिए? अनेक बच्चे ऐसे होंगे जो एक अच्छे पूर्व–स्कूल में तो उन्नति कर लेंगे, लेकिन हमारे जैसी क्षमता का सहयोग मिलने के बिना आगे नहीं बढ़ पाएँगे। इस पर बहुत गर्मागर्म बहस हुई, लेकिन अन्ततः हम दाखिला नीति के बारे में एक सहमति पर पहुँच गए : कि हम स्कूल में पहले से मौजूद बच्चों के भाई–बहिनों को और स्कूल के शिक्षकों तथा कालेज के शिक्षकों के बच्चों या उनके बच्चों के बच्चों को पहले वरीयता देंगे। चूँकि स्कूल बाल विकास के स्नातकोत्तर विभाग से सम्बद्ध था और उसके विद्यार्थियों के लिए एक प्रयोगशाला की तरह भी काम करता था, इसलिए हमने गोद लिए गए बच्चों तथा जुड़वाँ बच्चों को प्राथमिकता देने का निर्णय लिया। बचे हुए स्थान सबके लिए खुले थे।

यह निर्णय ले चुकने के कारण कि कोई परीक्षण नहीं किया जाएगा, हमने सीटों के लिए पहले आओ पहले पाओ की नीति तय कर ली। आवेदन पत्र मिलना शुरू होने के दिन सुबह 5.00 बजे से इसके लिए नियत खिड़की के बाहर कतार लगना प्रारम्भ हो गई। जो लोग अपनी जगह किसी को भेज सकते थे, उन्हें स्वाभाविक रूप से "आगे स्थान" मिल गया। उस कतार में अनेक चपरासी, ड्राइवर तथा क्लर्क थे। कुछ पालकों ने अपनी चतुराई तथा आर्थिक संसाधनों की अपनी सामर्थ्य, दोनों को प्रदर्शित किया था!

इस प्रक्रिया में एक दिलचस्प बात हुई थी। बच्चे योग्यताओं तथा प्रतिभाओं की विस्तृत श्रेणी से आए थे। हमने पाया कि चार या पाँच बच्चे अक्षमता (उदाहरण के लिए, डाउन सिंड्रोम, बहुत कमजोर नजर, स्पास्टिक बाधा) से ग्रस्त थे। निश्चित रूप से, हमने उन्हें लिया और तत्काल उनके लिए एक विशेष सेक्शन निर्मित किया। हमारी जिस शिक्षिका ने उसकी जिम्मेदारी ली उसके पास प्रशिक्षण, अनुभव और अद्भुत स्नेहपूर्ण उत्साह था। उसके अगले वर्ष हमने दाखिले में मामूली या मध्यम दर्जे की अक्षमता से बाधित बच्चों को वरीयता दी और ऐसे पाँच और बच्चों को लिया। अब वह दस बच्चों की कक्षा हो गई।

हमने प्रत्येक सेक्शन को एक नदी का नाम दिया था : कावेरी, यमुना, नर्मदा तथा अन्य। विशेष ध्यान की आवश्यकता वाले बच्चों की कक्षा को "संगम" नाम दिया गया।

हमें अभी भी एक समस्या का सामना करना था। हमें पता चला कि कुछ बच्चे मीलों दूर से आते थे और कभी–कभी वे स्कूल के घण्टों में उनींदे रहते थे। हमें लगता था कि घर पहुँचने तक वे निश्चित ही एकदम निढाल हो चुकते होंगे। हमारी समझ में उचित यही था कि किसी भी बच्चे को स्कूल बस में आते या जाते समय 30 मिनट से अधिक समय नहीं बिताना चाहिए। और यदि उन्हें निजी वाहन से भी छोड़ा जाता है तो उसमें भी बहुत समय नहीं लगना चाहिए। इसलिए, अगले वर्ष की दाखिला नीति में, हमने स्कूल से 5 किमी. के घेरे में आने वाले नए बच्चों को ही लेने का फैसला किया। इसका पालकों की ओर से कुछ विरोध हुआ और हमें एक या दो नए दाखिलों में दो–एक किमी. की ढील देना पड़ी। यह तो हमें केवल बाद में ज्ञात हुआ कि कुछ पालकों ने अपने बच्चों को सिर्फ भर्ती करवाने के लिए "इस जादुई घेरे" में रहने वाले किन्हीं मित्रों या परिवार के लोगों का पता दे दिया था। वे हमेशा हमसे एक कदम आगे रहते थे।

कार्यक्रम : संगम, क्षमता संवर्धन केन्द्र तथा डे–केयर

संगम

संगम में 3 से 7 साल की उम्र के दस बच्चे थे। उनमें से एक या दो बच्चे संगीत या मिट्टी के काम जैसी गतिविधियों के मुख्य समूह में आ जाते थे। इसे सभी बच्चों के पूरी तरह से स्कूल और उसकी दिनचर्या से तालमेल बिठा लेने के बाद किया गया। कभी–कभी बड़े बच्चों के किसी नृत्य को देखने के लिए संगम की पूरी कक्षा दर्शकों की तरह आ जाती थी। दूसरे मौकों पर, वे बस पास के सब्जियों के बगीचे में अपनी किसी एक शिक्षक के साथ चले जाते थे। हालाँकि वे सभी हो सकता था कि पढ़ना या लिखना न सीख रहे हों, पर वे परिवेश से परिचित हो गए थे और उन्हें वहाँ अपनेपन का एहसास होता था। वह उनका स्कूल था। मेरी दृष्टि में, यह सममुच का समावेश था, जैसा कि किसी भी परिवार में होता है।

यह बात फैल गई कि हम विशेष जरूरतों वाले बच्चों को वरीयता दे रहे थे, लेकिन हमारा तो फीस लेने वाला स्कूल था। कभी–कभी निम्न मध्यम वर्ग का कोई परिवार अपने बच्चे के साथ आ जाता था। यदि हम बच्चे को लेने की स्थिति में होते थे तो हम उसे ले लेते थे और फिर समृद्ध पालकों में से किसी से पूछते थे कि क्या वे एक और बच्चे को सहारा दे सकते थे। हमें शायद ही कभी कोई इनकार करता था। और भी बहुत सी जानकारी दी जा सकती हैं, लेकिन मैं यहीं इस बात को समाप्त करूँगी।

क्षमता संवर्धन केन्द्र

हमने 2 किलोमीटर के दायरे में एक सर्वेक्षण किया और यह पता लगाया कि क्या इस क्षेत्र में किसी प्रकार की संवेदी या शारीरिक अक्षमता से ग्रस्त प्राथमिक स्कूल की उम्र वाले कोई ऐसे बच्चे हैं जो इसलिए स्कूल छोड़ गए या कभी स्कूल गए ही नहीं , क्योंकि उन्हें ऐसी कोई उपयुक्त संस्था नहीं मिली थी जो उन्हें स्वीकारती। ऐसे बच्चों के सेक्शन का भार वहन करने के लिए, हमने मानव संसाधन विकास मंत्रालय के अन्तर्गत आने वाले "प्राथमिक शिक्षा में नवाचारी एवं प्रायोगिक कार्यक्रमों" के लिए उपलब्ध अनुदान के लिए आवेदन दिया। अच्छी बात यह कि हमें

लगभग आठ वर्षों तक इसके लिए धनराशि मिलती रही। हमने एक वैन खरीदी जिसकी सभी सीटों में विशेष सीटबैल्ट लगी हुई थीं, ताकि ऐसे प्रत्येक बच्चे को घर से लाया और वापस दरवाजे पर सुरक्षित छोड़ा जा सके। उनके लिए विविध प्रकार की गतिविधियों की योजना बनाई गई। एक लोकप्रिय गतिविधि कठपुतली–कला की थी जिसे प्रतिभावान गायकों तथा कारीगरों के एक स्वैच्छिक समूह "जन माध्यम" द्वारा संचालित किया जाता था। हमने विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से भी, उनकी विस्तारण गतिविधियों के लिए योजना के तहत, कुछ धनराशि जुटा ली थी। क्षमता संवर्धन केन्द्र का उद्देश्य यह प्रदर्शित करना था कि मामूली तथा मध्यम श्रेणी की अक्षमताओं से बाधित बच्चों के मिले–जुले समूह के लिए स्कूली गतिविधियाँ किस प्रकार नियोजित की जा सकती थीं। हमारे काम को देखने के लिए बहुत लोग आते थे।

डे–केयर

हमने पाया कि हमारे पूर्व–स्कूल के बच्चों की कुछ माताएँ पूर्ण कालिक नौकरी करती थीं और वे आसानी से दोपहर 12 बजे के बाद अपने बच्चों को वापस नहीं ले जा सकती थीं। हमने उन्हें दोपहर के सत्र में बच्चों को हमारे पास ही छोड़ देने के लिए आमंत्रित किया। इसके लिए हमने कुछ अतिरिक्त शुल्क लेना तय किया। हमने इन बच्चों के बड़े भाई–बहिनों को भी, उनका नियमित स्कूल समाप्त होने के बाद, उनके ही साथ बने रहने की अनुमति भी दे दी। कभी–कभी, ऐसे पालक, जिनके छोटे बच्चे हमारे स्कूल में नहीं थे, भी अपने बड़े बच्चों को हमारी देखरेख में रखने के लिए हमसे कहते थे। इसलिए डे–केयर केन्द्र में बच्चों का मिला–जुला आयु समूह था। सभी बच्चों को दोपहर में गरम खाना मिलता था। फिर छोटे बच्चों को सुला दिया जाता था, और अन्य बच्चों के लिए कलाएँ, शिल्प, खेल तथा संगीत, नाटक और कठपुतली की गतिविधियाँ होती थीं। यह सेक्शन 5.00 बजे तक खुला रहता था। यह सेवा पालकों के बीच बहुत लोकप्रिय थी जिन्हें पता था कि उनके बच्चे सुरक्षित देखरेख में थे, उन्हें अच्छी संगत मिली हुई थी और वे पेशेवर देखभाल करने वालों के हवाले थे। मुझे लगता है कि यह अनेक स्कूलों के लिए एक नमूना है। ऐसा कार्यक्रम समुदाय के लिए एक अमूल्य सुविधा बन जाएगा।

राजकुमारी अमृत कौर बाल अध्ययन केन्द्र के बारे में ताजा जानकारी

– सुधा पार्थसारथी के द्वारा

स्वर्णजयन्ती वर्ष 2005 में, अक्षमता विकसित करने के सम्भावित जोखिम वाले शिशुओं के लिए (जन्म तथा उसके उपरान्त) आरम्भ में ही सहायता प्रदान करने के लिए सेतु (सिस्टमेटिक अर्ली ट्रेनिंग यूनिट – व्यवस्थित प्रारम्भिक प्रशिक्षण इकाई) का शुभारम्भ हुआ।

केन्द्र द्वारा प्रदान की जा रही विभिन्न सेवाओं में निम्नलिखित शामिल हैं :

शिशुओं की देखरेख तथा डे–केयर कार्यक्रम
(6 माह – 12 वर्ष)

किलकारी : नन्हे बच्चों का क्लब
(6 माह – 2 वर्ष)

प्ले सेण्टर (2 – 3 वर्ष)

नर्सरी स्कूल (3 – 5 वर्ष)

सेतु : सम्भावित जोखिम वाले शिशुओं के लिए प्रारम्भिक प्रयास इकाई (जन्म – 3 वर्ष)

विशेष जरूरतों वाले बच्चों के लिए शैक्षिक तथा उपचारात्मक कार्यक्रम (3 – 12 वर्ष)

वाणी तथा व्यावसायिक चिकित्सा
(स्पीच एण्ड ऑकुपेशनल थेरेपी)

साथी : परामर्श प्रकोष्ठ (काउन्सिलिंग सैल)

विशेष जरूरतों / अक्षमताओं वाले बच्चों और युवाओं का व्यक्तित्व–विकास एवं प्रशिक्षण

वर्तमान (2013–2014) में केन्द्र में 9 कक्षाओं में बँटे हुए लगभग150 विद्यार्थी हैं। सभी कक्षाओं को नदियों के नाम दिए गए हैं : क्षिप्रा, नर्मदा, कावेरी, सरयू तथा संगम। हर कक्षा मानो एक नदी है जिसमें से बिना दबाव या अवरोध के जल प्रवाहित होता है। यही वह विचारधारा है जो बच्चों को पढ़ाने और उनकी देखरेख करने वाले केन्द्र के दृष्टिकोण का आधार है।

केन्द्र का समावेशी कार्यक्रम, "संगम", सभी जलप्रवाहों का मिलकर एक ही धारा निर्मित करना निरूपित करता है। हमारे कार्यक्रम भी विभिन्न योग्यताओं तथा विभिन्न पृष्ठभूमियों के बच्चों का संगम हैं जो साथ–साथ सीखते और फूलों की तरह विकसित होते हैं। प्रारम्भिक प्रयास

केन्द्र, सेतु, घर तथा स्कूल में सीखने के फासले को पुल की तरह जोड़ देता है।

जहाँ दो कक्षाएँ केवल विशेष जरूरतों वाले बच्चों के लिए समर्पित हैं, इन कक्षाओं के कमरे सामान्य कक्षाओं से लगे हुए हैं। नर्सरी स्कूल की दोनों सेक्शन समावेशी हैं। प्रार्थना का समय, खेल का समय, पाठ्येतर गतिविधियाँ, उत्सव मनाना, भ्रमण दौरे, इनमें सभी बच्चे मिलकर शामिल होते हैं। अतः यह वातावरण अपने साथियों का अवलोकन तथा अनुकरण करने के द्वारा सीखने में सहायता करता है, साथ ही उनमें पारस्परिक संवेदनशीलता को बेहतर बनाता है। हर बच्चे पर अलग–अलग ध्यान देने वाला शैक्षिक कार्यक्रम उन पहलुओं को समाहित करता है जिनमें अतिरिक्त तथा विशेष सहायता की आवश्यकता होती है।

एकीकरण तथा समावेश समुदाय में इन बच्चों की आवश्यकताओं और अधिकारों के प्रति संवेदनाएँ निर्मित करने में मदद करता है। यह ऐसे बच्चों के अपनी पूरी अन्तर्निहित क्षमता को हासिल करने और समुदाय के उत्पादक सदस्य बनने के लिए उनकी सहायता करने में खुद समुदाय को उसके कर्तव्य के प्रति जागरूक भी बनाता है। यहाँ इसका उल्लेख करना जरूरी है कि केवल बच्चे ही नहीं, बल्कि उनके पालक, टैक्सी चालक, कालेज के विद्यार्थी तथा स्टाफ के सदस्य भी सभी बच्चों के सम्पर्क में आते हैं। हमें याद आती है केन्द्र की एक पूर्व विद्यार्थी सारा सिंह के पिता श्री प्रकाश सिंह की यह टिप्पणी – "विशेष जरूरतों वाले बच्चों और उनकी चुनौतियों के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करने में, मैं व्यक्तिगत रूप से प्रभावित हुआ हूँ ।" एक अन्य पूर्व विद्यार्थी शोहम खान की माँ सबीहा खान याद करती हैं कि कैसे पहले वे विभिन्न शारीरिक तथा मानसिक चुनौतियों से ग्रस्त बच्चों को ऐसे इकट्ठे समूह के रूप में देखती थीं जो कभी कुछ नहीं कर सकते। जब उनका बेटा नर्सरी सेक्शन में पढ़ता था, तो उनके अकसर केन्द्र आने और अन्य पालकों के सम्पर्क में आने से उन्हें विशेष बच्चों की भिन्न जरूरतों का एहसास हुआ और उनके प्रति उनका सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित हुआ।

सेतु कार्यक्रम के अन्तर्गत, (जन्म उपरान्त) सम्भावित जोखिम वाले बच्चों का विशेषज्ञों के एक दल द्वारा आकलन किया जाता है और एक उपयुक्त कार्यक्रम निर्मित किया जाता है। बच्चे की तैयारी तथा आवश्यकता पर निर्भर करते हुए, उपचार का प्रयास हर बच्चे के लिए अलग–अलग सत्रों, सामूहिक सत्रों या समावेशी सत्रों के रूप में हो सकता है। सत्रों के दौरान परामर्श द्वारा पालकों, देखरेख करने वालों, परिवार के सदस्यों, साथियों तथा भाई–बहिनों को विशेष जरूरतों वाले बच्चे को बड़ा करने में सामने आने वाली चुनौतियों को पार करने के लिए सशक्त बनाया जाता है। साथ ही, प्रदान किए जा रहे कार्यक्रम का घर पर पालन करने के लिए पालकों को प्रोत्साहित किया जाता है ताकि बच्चे के साथ गुजरने वाले अपने समय का वे सार्थक ढंग से इस्तेमाल करें।

व्यावसायिक प्रशिक्षण कार्यक्रम के हिस्से की तरह, विशेष जरूरतों वाले युवा लोगों को हमारे विशेष शिक्षाविद द्वारा प्रशिक्षण दिया जा रहा है। ऐसे प्रशिक्षित व्यक्तियों को रोजगार प्राप्त करने में सहायता भी प्रदान की जा रही है।

वित्तीय सहायता की जरूरत वाले बच्चों के लिए एक प्रायोजन कार्यक्रम द्वारा, समाज के कमजोर वर्गों के उन बच्चों का समावेश किया जा रहा है जिनकी गुणवत्तापूर्ण सेवाओं तक पहुँच नहीं है।

बच्चों से सम्बन्धित समस्याओं के समाधान के लिए पालकों की कार्यशालाएँ भी समावेशी तरीके से संचालित की जाती हैं, जिनमें सभी पालक मिलते–जुड़ते हैं और बच्चों की देखभाल करने के अनुभवों और चुनौतियों को आपस में साझा करते हैं।









एस. आनन्द लक्ष्मी ने मेडिसन स्थित विश्वविद्यालय ऑफ विसकोंसिन से मानव विकास में डाक्टरेट की उपाधि प्राप्त की। उन्होंने चेन्नई के एक नवाचारी स्कूल, विद्या मन्दिर, के प्रारम्भिक वर्षों की जिम्मेदारी वहन की। बाद में वे लेडी इरविन कालेज में पढ़ाने लगीं और उन्होंने वहाँ बाल विकास का स्नातकोत्तर विभाग प्रारम्भ किया और उस समय तक उसकी प्रमुख रहीं जब उन्होंने कालेज के डायरेक्टर का पद–भार ग्रहण किया। अवकाश प्राप्त करने के बाद से, वे सेवा (एस.ई.डब्ल्यू.ए.) अहमदाबाद, एस.डब्ल्यू.आर.सी. (बेयरफुट कालेज) तिलोनिया तथा वोलोण्टेरिएट, पाण्डिचेरी और बाला मन्दिर, चेन्नई जैसे स्वैच्छिक कार्यक्रमों में सक्रिय रही हैं। संज्ञानात्मक विकास तथा सामाजीकरण, शोध पद्धतियाँ तथा भारतीय संस्कृति के पहलू उनके प्रकाशित लेखन के विषय हैं। उनसे anandalakshmy@vsnl.net पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद** : सत्येन्द्र त्रिपाठी